खुतबात ए फकीर /३

उर्दु जिल्द १३ से इन मज़मुनो का लिप्यांतरण किया गया है.

पीर ज़ुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

1. रिज़क मिलने के दो तरीके

हदीस मे है जो सुबह की नमाज़ जमात के साथ पढता है वो अल्लाह के जिम्मे मे आ जाता है. (मुस्लिम)

शफिक बलखी रह फरमाते है हमने पांच चीझे तलाश की उनको पांच जगह पाया, रोज़ी की बरकत चाश्त की नमाज़ मे मिली, कबर की रौशनी तहज़्ज़ुद की नमाज़ मे मिली, मुनकर नकिर के सवाल का जवाब मांगा तो कुरान की तिलावत मे पाया, और पुल सीरात से सहूलत से पार होना रोज़ा और सदका मे पाया, और अर्श का साया तन्हाई मे पाया. [फजाइले अमल]

इसको मिसाल से समझो बाज़ अवकात मुरघी का मालिक पियाले मे दाने डाल कर सामने रख देता है, वो जब चाहती है पियाले से दाने खालेती है, और बाज़ वकत मालिक अपने हाथ मे दाने लेकर उनको फेंक देता है और वो दाने फेल जाते है, वो सारा दिन दाने चुगती रहती है, इस तरह मुरघी को रिज़क तो इतना ही मिलता है जितना पियाले मे था, लेकिन फेला देने की सूरत मे सारा दिन एक एक दाना उसे चुगना पडता है, और इसकी खातिर सर झुकाना पडता है, यही फर्क है.
जो इन्सान नेकी करता है और गुनाहो से बचता है अल्लाह उसको रिज़क पियाले मे डाल कर देते है, और वो आसानी से इस रिज़क से फायदा उठाता है, और जो नाफरमानी करता है और गफलत का शिकार रहता है अल्लाह उसका रिज़क फेला देते है और फरमाते है के सारा दिन चुगता रह, वो सुबह से शाम तक बाजार मे धक्के खाता रहता है.
अल्लाह को जो रिज़क बन्दे को देना है वो लिखा गया है, अगर इन्सान इस रिज़क को हलाल तरीके से हासिल करेगा तो वही मिलेगा, और अगर जल्दबाज़ी करके हराम तरीक से कमायेगा फिर भी इतना ही मिलेगा जो मुकद्दर मे लिखा जा चूका है लेकिन हराम का ठप्पा लग जाता है.

2. मकसदे ज़िन्दगी और ज़रूरते ज़िन्दगी

अल्लाह ने कुरान मे इरशाद फरमाया है क्या ये खयाल करते हो के हम ने तुम्हे बे-फायदा पैदा किया, और ये के तुम हमारी तरफ नही लौटाये जावोगे. सुरे मूमिनुन/११५

दूसरी जगह इरशाद फरमाया है और मेने जिन्नातो और इन्सानो को, अपनी इबादत के लिये ही पैदा किया है, सुरे जरीयात/५६ इन आयत्तो से पता चला के इन्सान की पैदाइश का मकसद अल्लाह की इबादत है.

एक इन्सान का मकसद होता है और एक इन्सान की ज़रूरत होती है, ज़िन्दगी के मकसद को पूरा करना इन्सान के जिम्मे कर दिया, और ज़रूरते ज़िन्दगी को पूरा करना अल्लाह अपने जिम्मे ले लिया, ज़िन्दगी के मकसद को हासिल करने के लिये इन्सान अल्लाह की इबादत करता है और ज़रूरीयाते ज़िन्दगी मे इन्सान का रिज़क आता है, जो अल्लाह ने अता करने का वादा किया है, और ज़मीन पर जो भी जानदार है उसके रिज़क का जिम्मा अल्लाह ने ले लिया है. सुरे हूद/६ इन्सान जब तक अपने मकसद को पूरा करता रहता है, अल्लाह इसकी ज़रूरतो को पूरा करते रहते है और जब इन्सान मकसद को पूरा करना छोड देता है तो अल्लाह इसकी ज़रूरतो को पूरा करना छोड देते है.

3. दुनिया की ज़िन्दगी मे माल की एहमियत

अल्लाह का इरशाद है ए इमान वालो तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद कही तुम्हे अल्लाह की याद से गाफिल ना करदे, और जिन लोगो ने ऐसा किया वो नुकसान उठाने वाले होंगे. सुरे मुनाफिकून/९

अल्लाह की याद मे दो चीझे रूकावट बनती है एक माल, और दूसरी औलाद, ये दोनों चीझे इन्सान के रिज़्क मे शामिल है, माल अल्लाह की नेमतो मे से एक नेमत है, अगर इसका इस्तेमाल ठीक तरीके से किया जाये, और अगर इसका इस्तेमाल ठीक तरीके से नही किया जाये, तो ये वबाल बन जाता है.

इसकी मिसाल छुरी की है, अगर इससे फल और सबजी काटे जाये तो अच्छी बात है, लेकिन अगर इससे किसी इन्सान का बाजु काटे तो ये बुरी बात है.

इसी तरह माल का इस्तेमाल उस माल को अच्छा या बुरा बना देता है, ये माल एक ऐसी चीझ है जिसके बगैर इन्सान का गुज़ारा नही है, और इसके साथ निबाह करना भी आसान काम नही है.

कश्ती पानी मे उस वकत तक चलती है जब तक वो पानी के उपर रहे, अगर पानी कश्ती के नीचे रहने के बजाये कश्ती के अन्दर भर जाये तो वो पानी इस कश्ती के डूबने की वजह बन जाता है, इसी तरह जब तक माल

इन्सान के ताबे रहे तो ये कश्ती तेरती रहती है, और जब ये इन्सान के दिल मे उतर जाये तो उसके इमान की कश्ती भी डूब जाती है.

इसलीये कहा गया है माल इन्सान का बेहतरीन खादिम है और बदतरीन आका है, जो इसे खादिम बना कर रखता है उसकी ज़िन्दगी और आखिरत दोनों मे आसानी होती है, अगर इसे अल्लाह की राह मे खर्च किया जाये तो इसे बडा मकाम मिल जाता है, और जो इसे आका बनाले और इसकी पूजा करना शुरू करदे तो ये बदतरीन आका है, कुछ तो मालदार होते है और कुछ चोकीदार होते है, मालदार जो अल्लाह की राह मे दोनों हाथो से खर्च करे, और जिसने इसे समेट अपने पास जमा कर लिया और गिनता रहता है, जब वो मर जायेगा तो औलाद तो ऐश करेगी मगर इस माल का हिसाब इस बन्दे से लिया जायेगा.

4. रिज़्क के बारे मे इन्सान की परेशानी

अल्लाह ने सारे जानदारो के रिज़्क का जिम्मा ले लिया है, और वो सब को रिज़्क पोहचता है, लेकिन इन्सान उसके लिये परेशान होता है, जबके बाकी मखलूक परेशान नही होती, कोई परिन्दा ऐसा नही जो अपने रिज़्क को जमा करके रखे, जिनको अल्लाह पर भरोसा

होता है, उन्हे हमेशा रिज़क मिलता है, ये कितनी अज़ीब बात है के बिल्ली और चूहे तो खाये, और जो अल्लाह का नायब और खलीफा है वो भूका रहे, हम पर जो तंगी और परेशानिया आती है वो जियादातर हमारे गुनाहो का नतीजा होती है, वरना जो अल्लाह मूसा (अल) की कौम को मन और सलवा खिला सकता है, क्या वो उम्मते मुहाम्मदिया ﷺ को मन और सलवा नही खिला सकता, रिज़क के बारे मे हमेशा ये ख्याल रखे के मेरा रिज़क बन्दो के जिम्मे नही है, बलके अल्लाह के जिम्मे है, बन्दे भूल सकते है, लेकिन अल्लाह नही भूल सकते.

तफसीर इबने कसीर मे वाकिया लिखा है, के कव्वे के बच्चे जब पैदा होते है तो उनके बदन पर बाल और पर सफेद होते है, ये देख कर कव्वा उनसे नफरत करके भाग जाता है, कुछ दिनो के बाद जब उनका रंग कला हो जाता है, तो उसके मां बाप आते है, और उनको दाना वगेरा देते है, उन शुरूवात के दिनो मे जब उनके मां बाप उन बच्चो को छोड कर चले जाते है और उनके पास भी नही आते, उस वकत अल्लाह छोटे छोटे मच्छर उनके पास भेज देते है और वही मच्छर उन्की खोराक बन जाते है.
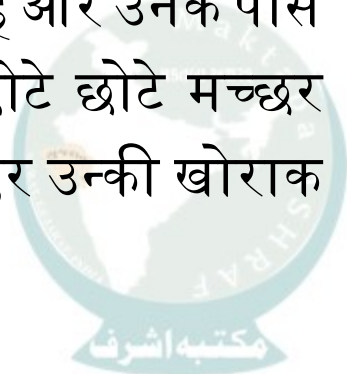
5. मांगता कब है लोग तो हाथ जोड कर देते है

हजरत थानवी(रह) ने एक बच्चे को पूछा के आपको अरबी ज़बान अच्छी लगती है या english ज़बान अच्छी लगती है? वो केहने लगा अरबी ज़बान, पूछा के अरबी ज़बान कियु अच्छी लगती है? केहने लगा के कुरान अरबी ज़बान मे है, हजरत ने फिर उससे पूछा के अरबी पढेगा तो खायेगा कहा से? इस सवाल को सुन कर बच्चे ने बहुत ही एतेमाद और हिम्मत से जवाब दिया के बन्दा जब अरबी पढता है, तो वो खुदा का हो जाता है, और जब बन्दा खुदा का हो जाता है तो अल्लाह बन्दो के दिलो मे डालता है के इसे दो और वो देते है.

हजरत ने कहा ये तो ठीक है, लेकिन ऐसे शख्स को लोग जलील समझते है, वो केहने लगा के जिल्लत तो उस वकत होती जब वो किसी से मांगता हो, वो मांगता कहा है, लोग तो हाथ जोड कर देते है, इसलीये हमारे बुज़रूगो ने फरमाया है के अल्लाह जिस से मोहब्बत करते है उसको दुनिया से इस तरह बचाते है जिस तरह लोग नजला जुकाम के मरीज को सर्दी से बचाते है.

अल्लाह उनको बाकद्रे ज़रूरत रिज़क दे देते है, के उनको किसी के आगे हाथ फेलाने की ज़रूरत नही पेश आये, अल्लाह उनको खुशियो भरी ज़िन्दगी अता फरमा देते है, इन्सान अल्लाह के साथ जेसा गुमान

करेगा, अल्लाह उसके साथ वेसा ही मामला फरमायेगे, इस लिये दीन का काम करने वालो को ये यकीन कर लेना चाहिये हमे अल्लाह उसी रास्ते से खिलायेगे जिस रास्ते से वो अपने नबियो को खिलाया करते थे.

6. तबाही की सुगंध और कुफर की सुगंध

अल्लाह से माल मे बरकत मांगने की ज़रूरत है, बरकत इसे कहते है इन्सान के पास जितना हो वो उसकी ज़रूरीयात के लिये काफी हो जाये, इसलिये के माल की जियादती से मसाइल हल नही होते, अगर माल जियादा हो तो उसमे तबाही की सुगंध है जब माल आता है तो गुनाह के दरवाज़े खुल जाते है, वो अल्लाह के बन्दो को अल्लाह का बन्दा भी नही समझता, इसी माल की वजह से इन्सान के अन्दर बडायी और तकब्बुर आ जाता है, और अगर माल कम है तो उसमे कुफर की सुगंध है.

हुजूर صلى الله عليه وسلم का इरशाद है करीब है के तंगदस्ती तुम्हे कुफर तक पोहचा दे, इसलिये के जब खाने को नही होगा फाका होगा और ज़रूरीयात पूरी नही होगी तो फिर शिकवे शिकायते ज़बान पर आयेगी के वो तो हमारी सुनता ही नही, अल्लाह से इस तरह की शिकायत की बाते इन्सान को कुफर तक पोहचा देती है इसी वजह से

बुज़रूगो ने कहा है आज के दौर मे माल इन्सान के लिये ढाल है, हा इतना ख्याल रहे के इस माल को अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये इस्तेमाल करे, ताके इन्सान की आखिरत सवर जाये.

7. परद ए गेब से खाने का इन्तेज़ाम

इमाम करतबी(रह) फरमाते है जब कबीलाए अशर के लोग हिज़रत करके मदीना पोहचे तो उनका खाना खतम हो चूका था, उन्होने अपना एक आदमी हुजूर ﷺ की खिदमत मे भेजा ताके आप उनके खाने का कुछ इन्तेज़ाम कर दे, वो आदमी जब हुजूर ﷺ के दरवाज़े पर पोहंचा तो अन्दर से हुजूर ﷺ की तिलावत की आवाज़ आई आप ये आयत तिलावत फरमा रहे थे, और नही है ज़मीन पर कोई चलने फिरने वाला मगर उसका रिज़्क अल्लाह के जिम्मे है, ये आयत सुनते ही उसके दिल मे ये ख्याल आया के जब अल्लाह ने सब का रिज़्क अपने जिम्मा ले लिया है तो फिर हम तो अल्लाह के नजदीक दुसरे जानवरों से गये गुजरे नही है, वो ज़रूर हमारे रिज़्क का बन्दोबस फरमा देंगे, वो वही से वापस चला गया और हुजूर ﷺ को कुछ ना बताया, लेकिन वापस जाकर अपने साथियों से कहा के खुश हो जावो, तुम्हारे लिये अल्लाह की मदद आ रही है, साथियों ने ये

समझा के इसने अपनी ज़रूरत हुज़ूर ﷺ को बयान कर दी और हुज़ूर ﷺ ने इन्तेज़ाम करने का वादा फरमा लिया है ये समझ कर निशचिंत हो गये, वो अभी बेठे ही थे के दो आदमी एक बडा सा गोश्त और रोटियों से भरा हुवा बरतन उठा कर लाये, उन्होने खूब पेट भर कर खाना खाया और बहोत सा बच भी गया, बचा हुवा खाना हुज़ूर ﷺ की खिदमत मे भेज दिया के ज़रूरत मे काम आ जाये, दो आदमी खाना ले कर हुज़ूर ﷺ की खिदमत मे हाजिर हुवे और अर्ज़ किया के ए अल्लाह के नबी आपका भेजा हुवा खाना बडा मजेदार था हुज़ूर ﷺ ने फरमाया मेने तो कोई खाना नही भेजा, तो उन्होने तफसील बताई ये सुन कर हुज़ूर ﷺ ने फरमाया ये मेने नही बलके उस रब ने आप का रिज़क भेजा है जिसने हर मखलूक का रिज़क अपने जिम्मे ले लिया है, अल्लाहु अकबर.

8. गुनाहो के बावजूद चार नेमते बाकी रहती है.

अगर कोई नौकार मालिक की नाफरमानी करे तो मालिक उसको पगार देना बंद कर देगा, मगर अल्लाह का मामला ऐसा नही है, वो हलीम है बडे हौसले वाला है, वो हमारी गलतियो के बावजूद माफी और रहम का मामला फरमाते है, और चार नेमतो से मेहरूम नही करते.

१. बडे गुनाहों को करने के बावजूद बन्दे का रिज़क बंद नही करते.
२. बडे गुनाहों को करने के बावजूद उससे तंदुरूस्ती नही छीनते, जेसे गुनाह करते ही उसके हाथ मे लकवा लगा देते.
३. बडे गुनाहों को करने के बावजूद अल्लाह बन्दे को फोरन जलील नही कर देते बलके मख्लूक से छुपा लेते है.
४. बडे गुनाहों को करने के बावजूद गुनेहगार की फोरन पकड नही करते उसको मोका देते है की शायद मेरा बन्दा तौबा कर ले.
ये अल्लाह की रहमत नही है तो और क्या है.

9. वो गाफिल केसे हो सकता है

हजरत मूसा(अल) को वही नाज़ील होने के दरमियान घर वालो की रोज़ी का ख्याल आ गया, अल्लाह को ये बात अच्छी ना लगी, फरमाया, ए मूसा पथ्थर पर लाठी मारो, लाठी मारी तो पथ्थर टूट कर दो टुकडे हो गये, उसमे मे से एक पथ्थर निकला, इस पर भी लाठी मारी, उसमे से एक और पथ्थर निकला, उस पथ्थर को भी तोडा, उसमे से एक कीडा निकला जिसके मुंह मे हरा पत्ता था, वो कीडा तस्बीह बयाँ कर रहा था, पाक है वो जात जो मुझे देख रही है, मेरी बात को सुन रही है, मेरे

कयाम की जगह को जानती है, मुझे याद रखती है, और मुझे भूलती नही है, इससे हजरत मूसा(अल) को दिलासा देना था के जो अल्लाह कई पथ्थरो के अन्दर कीडे को रोज़ी पोहचा रहा है, वो इनके घर वालो से गाफिल केसे हो सकता है,

नजर गेब पर होनी चाहिये जेब पर नही- रिज़क दो तरह से मिलता है, वास्ते से, और बगैर वास्ते के, दुकान और कारोबार ये वास्ता बन जाती है, खेती या करोबार मे उम्मीद से जियादा पेसे कमा लिये, ये बगैर वास्ते के हो गया.

कुछ ना हो तो हर बन्दा रो रो कर दुआये मांगता है, लेकिन असल तवक्कुल उसे कहते है के सब कुछ होने के बावजूद बन्दा अल्लाह ही से मांगे.